

बंदिश देख के गाओ

आज के लिए मंथन का विषय मैंने चुना है , क्यों कि डॉ. अंजलि नान्देडकर का ऐसा मानना थाकि मैं इस बार अपने मन से विषय चुनूँ आज का विषय है "बंदिश देख के गाओ" आप सोचेंगे , यह कैसा विषय है ! गाते समय सभी लोग बंदिश देख के ही तो गाते हैं, असल में बंदिश तो रटी हुई होती है; उसे क्या देखना? सच है आप सब का कहना, बंदिश रटी हुई ही होती है। किन्तु हम ने गुरु जनों के मुँह से यही सीख बार बार सुनी है -- बेटे , बंदिश देख के गाओ। इस का अर्थ यह हुआ कि इस सीख का कोई गहरा अर्थ है। यही सच है -- इस सीख के पीछे गहरा अर्थ छिपा हुआ है।

एक राग की कई बंदिशें हमें सिखाई जाती हैं। राग के आरम्भ में हमें जो आलाप और तानें सिखाई जाती हैं, हम बन्दिशों को गाते समय उन्हीं आलापों और तानों का प्रयोग करते हुए राग की प्रस्तुति देते हैं। अब कुछ बन्दिशों के मुखड़े देखें तो ध्यान में आ जायेगा कि उनकी शुरुआत अलग अलग स्वरों से होती है। जैसे कि यमन का एक खयाल है--बनरे बलैया - यह 'नी नी ध म प ग म ध प प ' -- इस प्रकार से नी स्वर से शुरू होता है। दूसरा खयाल सब का जाना पहचाना है - मेरो भलो, यह भी नी से ही शुरू होता है। तीसरा खयाल है - मेरा मन बांधलीनो -- यह --- 'सा नी रे सा नी ध नी नी रे सा ' इस प्रकार से षड्ज से शुरू होकर षड्ज पर ही पर सम दर्शाता है। [यहाँ दिए गए ध और नी मन्द्र सप्तक के स्वर हैं] अब यदि हम आलाप एवं तानें गायेंगे तो जाहिर है कि हर खयाल के लिए आलाप एवं तानें अलग अलग ढंग से गाई जाएँगी। मैं अपने कथन को स्पष्ट करती हूँ -- निषाद से अर्थात् मध्य सप्तक के निषाद से यदि खयाल की शुरुवात है तो हमारा आलाप एवं तान मन्द्र निषाद या मध्य षड्ज पर समाप्त हो तो वह ठीक ढंग नहीं होगा। हमें आलाप एवं तानों को मध्य सप्तक के पंचम, धैवत या निषाद पर समाप्त करना होगा और फिर निषाद से शुरू होने वाला मुखड़ा पकडना होगा एवं सम तक पहुंचना होगा। यहाँ यह बताना आवश्यक नहीं है कि आलाप और तानें शुरू तो हमेशा की तरह नीचे के सुरों से ही होंगी , किन्तु उन्हें समाप्त करते समय हमें उन्हें आगे बढ़ाते हुए पंचम, धैवत, निषाद तक पहुंचना होगा। स्पष्ट है कि यह तरीका बच्चों या प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए नहीं है। वे लोग तो उन्हें दिए गए तैयार-- अर्थात् ताल की मात्राओं सहित बाँध कर दिए गए आलाप और तानें ही गा सकते हैं, इससे अधिक कुछ करना उन्हें आता भी नहीं है। यह 'बंदिश देख के गाने' की शैली आगे के अर्थात् सीख कर स्वयं आलाप - तानें बना सकने वाले लोगों के लिए है।

अब कुछ उदाहरण छोटे खयालों के भी देखें। इन ऊपर दिए रागोंसे अलग रागों के उदाहरण लेते हैं। बिलावल राग की एक बंदिश है -- कवन बटरिया -- जो म या ग से शुरू होती है। दूसरी बंदिश है -- जाग उठे सब जन तुम जागो --

यह बंदिश तार सप्तक के षड्ज से शुरू होती है। अब यह तो पिछले विवरण से स्पष्ट हो चुका है कि बंदिश कि शुरुवात के स्वरों के साथ घुल मिल जाये ऐसा ही आलाप और तानों का आखरी हिस्सा होना चाहिए। यहाँ पहली छोटे ख्याल की बंदिश मध्य सप्तक के गंधार या मध्यम से शुरू होती है और दूसरी बंदिश तार षड्ज से शुरू होती है। अतः पहली बंदिश के आलाप तानों को मध्य सप्तक के ग या म के आसपास समाप्त करना होगा या रिषभ पर समाप्त करने का भी पर्याय है। दूसरी बंदिश के लिए आलाप-तानों को मध्य सप्तक के धैवत, निषाद पर समाप्त करना होगा, कभी कभी पंचम पर भी अंत किया जा सकता है।

इस प्रकार से बन्दिशों के हिसाब से आलाप एवं तानों को गाना ही एक अच्छी और स्तरीय शैली मानी जाती है। पाठक वर, आज के लिए इतना ही पर्याप्त है। फिर एक नए विचार के साथ मिलेंगे। तब तक के लिए नमस्कार !